JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पं. श्रीनिवास शुक्ल की नीव–शिला कृति में राष्ट्रीय चेतना के स्वर

भारती तिवारी
पी–एच.डी. शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध–निर्देशक : डॉ. कुंजीलाल पटेल
सह प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)
हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सार –

बुन्देलखण्ड की भूमि आदिकाल से ही साहित्य से समृद्ध है। यहाँ के मध्यप्रदेश में जिस प्रकार पन्ना प्रसिद्ध है धरती की मिट्टी में जब हम पत्थरों में से छानकर कर हीरे पहचानकर अलग कर लेते हैं वह बहुमूल्य होता है। ठीक उसी प्रकार यहाँ कवि हैं जो अपने साहित्य की उत्कृष्टता से अपनी रचनाओं के माध्यम से चमक रहे हैं। इनकी ओजमयी वाणी नवजवानों में ऊर्जा का संचार करती है। **श्रीनिवास शुक्ल की 'नीव–शिला'** एक ऐसी काव्यकृति है जो समाज को नई दिशा देती है।

मूल शब्द – नीव–शिला, राष्ट्रीय चेतना ।

प्रस्तावना –

श्री निवास शुक्लजी का जन्म 9 अगस्त 1921 में छतरपुर जिला मध्यप्रदेश में हुआ था। उनको साहित्य वातावरण बचपन से प्राप्त हुआ था। उनके पिता श्री बुन्देली के प्रसिद्ध कवि थे। शुक्लजी स्वयं सेवक संघ के सदस्य थे, सत्याग्रह में भाग ले चुके थे और उनको जेल यात्रा भी करनी पड़ी थी। वे छात्रजीवन से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गये थे।

उनकी नीव–शिला काव्य–कृति राष्ट्रीय चेतना से युक्त कृति है। कवि देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों को दाव पर लगाने वाले कोने–कोने के बलिदानियों को याद करता है और आज की युवा पीढ़ी में देशभक्ति की नई ऊर्जा प्रवाहित करता है।

"माँ की चरण–धूलि माथे धर, नभ–वर से आशीश सजाये,
भव्य भाल पर कुंकुम रोली का शुभमंगल तिलक लगाये।
दिव्य देह पर अगणित सुमनों के हारों का भार उठाये
कोटि–कोटि जन संकल्पों को उर में है साकार छिपाये
चला अनोखा लाल जननि का शीश बचाने, शीश उठाये।"[1]

नीव–शिला पृष्ठ 11

कवि इन पंक्तियों के माध्यम से देश के बलिदानियों की स्फूर्ति का वर्णन करता है कि वह भारत की शान बचाने के लिए अपने प्राणों को हंसते–हंसते निछावर करने जा रहा है। यहाँ के लोगों की बात क्या करे इस देश के तो फूल भी ऐसे वीरों के चरणों के नीचे जाना चाहते हैं।

"मुझे तोड़ लेना वनवाली देना उस पथ तुम फेक

मातृ–भूमि को शीश चढ़ाने जाते हो जहा वीर अनेक।"[2]

चतुर्वेदी माखन लाल पुष्प की अभिलाषा

1947 में देश ने गुलामी की जंजीरों से कठिन संघर्ष के बाद अंग्रेजो से आजादी पायी। जिन आदर्शों का स्वप्न लेकर यह संघर्ष चला। आज तक उनको प्राप्त नहीं किया जा सका। सत्ता मिलते ही सत्ताधारी अपने स्वार्थों मे उन बलिदानों केा भूल गये और वे आदर्श धरे के धरे रह गये।

"आजादी मिल गई किन्तु उसका सँवार कुछ शेष है।
दु:,ख के बादल छँटे किन्तु उनका खुमार कुछ शेष है।"[3]

नीव–शिला पृष्ठ 33

शोषण करने पर वह सत्ताधारी पक्ष पर व्यंग्य करता हुआ कहता है।

हमने तुम्हे विदेह समझकर किया समर्पित यह सिहांसन
यह क्या किया भोग कल्मष से दूषित कर डाले सब आसन ।

नीव शिला पृष्ठ 15

वर्तमान में भ्रष्टाचार, अवसरवादिता, अनाचार, का युग है सभी अपने आप को श्रेष्ठ बताने का प्रयास करते हैं। इनके बीच भोली–भाली जनता पिसती है कवि इस मानसिकता वाले व्यक्तियों से देश को बचाना चाहता है।

"धन्य मंथराबाद तुम्हारा,
लीलाकारी विमति तुम्हारी।
ऐसा चित्र सजाया तुमने,
जिसमें नित नूतन सम्मोहन
रीति गये अधिकोष रंग के
ऐसा किया चतुर्दिक दोहन ,
सकल विषैले है उत्पादन
अमृत के केवल उदबोधन
त्यों–त्यों छिद्र बडे इस घर में,
ज्यों–ज्यो किये चतुर संशोधन।"[4]

कवि का मानना है कि वर्तमान सत्ताधारी भाषण में ऐसी बातें करते हैं कि देशवासियों को मोहित कर लेते हैं। वे बाते बस कागजों में रहती हैं असल में उनकी कथनी करनी में अंतर होता है। वे मंथरा की भाँति केवल आग लगाने का काम करते हैं। एक–दूसरे पर आपेक्ष लगाते हैं और सत्ता में आते ही वे भी उसी प्रकार मार्ग अपनाते हैं शोषण का।

नीव शिला पृष्ठ 3

इसी तरह कवि मैथिलीशरण गुप्तजी भी अपनी रचना भारत–भारती में समाज में व्याप्त भ्रष्टचार, बईमान लोगों के प्रति व्यंग्य करते हुए लिखते है–

"चन्दे बिना उनका घड़ी भर काम कुछ चलता नही,
पर शोक है तो भी यहां समुचित सु–फल फलता नही
है वीर ऐसे भी बहुत जो देश–हित के ब्याज से
अपने लिए है प्राप्त करते दान–मान समाज से !।।"[5]

भारत–भारती पृष्ठ 114

शुक्लजी में देशभक्ति ही सब कुछ थी। कवि अपने देश के बुद्धिजीवियों को समझाने का प्रयत्न करते हैं और हिन्दी को तर्कों के आधार पर सिद्ध करते हैं कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो ।

कवि के लिए राष्ट्र सर्वो परि है। कवि चाहता है कि विश्व में जिस प्रकार भारत विविध राज्यों से बना है। यहाँ विविध प्रदेश हैं। सबकी संस्कृति परिधान खान–पान अलग है मगर विश्व में वह एक नाम 'भारत' से पहचाना जाता है। इसी तरह कवि देशहित मे चाहता है कि भारत की एक राष्ट्रभाषा हो हिन्दी। कवि का मन क्षुब्ध हो जाता है कि जो पहले राष्ट्रभाषा बनाने के पक्ष में थे इसमें ज्यादातर मत देने वाले अहिन्दी ही थे मगर बाद में वो अपने स्वार्थों में बदल गये। । यह देश पर बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह लगाता है। कवि कहता है कि हमारे देशवासियों को इस पर विचार करना चाहिए। जब अंग्रेजी हमारे देश की भाषा नही है फिर भी हम सम्मान करते है फिर हिन्दी राष्ट्रभाषा बनाए जाने पर हम अपने ही देश की अन्य भाषाओं का अपमान कैसे कर सकते हैं? भारत वह देश है जो विदेशी भाषा की भी इज्जत करता है तो फिर वह अपने देश की अहिन्दी भाषाओं का अपमान कैसे कर सकता है?

"तुमने अपने श्रम से मां को सम्मान दिया
भाषा का आसन दो गणराज्य व्यवस्था में।
अब बहक गये हो किसके कहने से बोलो
लग उठे कौन उन्माद प्रमाद अवस्था में।।"[6]

नीव–शिला पृष्ठ 37

जब देश आजाद नही हुआ था उस समय सभी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्ष में थे। कवि हिन्दी का विरोध करने वालों को समझाते हुए कहता है कि राजनैतिक स्वार्थों के कारण प्रान्तों को बहकाया जाता है जबकि हिन्दी सभी देशवासियों की भाषा है।

"तुम प्रांतीयता की चर्चा क्यों करते हो
ये भाषा–भाषा के विवाद सब झूठे है।
यों भेद डाल कर राज चलाने की चालें
चल नही सकेंगी, अब तो हम भी रुठे हैं।।"[7]

नीव–शिला पृष्ठ 38

कवि उन लोगों को अज्ञानी मानता है जो फिर भी हिन्दी का विरोध करते हैं।

"है विविध रंग के कण्ठ पात्र का मात्र भेद
सबमे अभेद निर्मल है वाणी का पानी।
जो इस अभेद मे भेद देखता अज्ञानी
जो लिखे में चिर अभेद सो हैं ज्ञानी।।"[7]

नीव–शिला पृष्ठ 39

तमिल ,तेलगू, कन्नड़ , मलयालम , उडिया, सिंधी, पंजाबी, बंगाली, राजस्थानी, मराठी, गुजराती, असमी इन सभी को कवि मंगलकारी मानता है।

कवि चाहता है पूरा देश हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए एक भी आवाज हिन्दी के विरोध मे न हो ।

अगर अपनी अपनी आत्मा से पूँछे कि देश की सामर्थ भाषा कौन है जो राष्ट्र भाषा बन सकती है तो आपके उत्तर मिलेगा हिन्दी।

"जो दिव्य पुरातन को नूतन से जोड़ सके,
जिसमें अतीत के गीत नये स्वर में गायें।
जो हमें हमारा रूप बोध दे वह ले लें,
मन को तोलें, हिन्दी बोले, अमृत घोलें।"[7]

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी शुक्ल जी की भाँति हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाएँ जाने पर बल देते हैं। यह बात विचार करने लायक है कि भारत की आजादी के इतने वर्षों के बाद भी लिखित संवैधानिक दर्जा प्राप्त राष्ट्रभाषा नही है।

विश्व भी यह जरूर सोचता होगा कि भारत की कोई संवैधानिक राष्ट्रभाषा क्यों नही है।

"है राष्ट्रभाषा भी अभी तक देश में कोई नही,
हम निज विचार जना सकें जिससे परस्पर सब कही
इस योग्य हिन्दी है तदपि अब तक न निज पद पा सकी ,
भाषा बिना भावकैता अब तक न हमसें आ सकी।"[8]

भारत–भारती पृष्ठ 160

"भगवान जाने देश मे कब आयगी सब एकता,
हठ छोड़ दो हे भाइयो! अच्छी नही अविवेकता।।"[8]

रचना –भारत–भारती पृष्ठ 160

नीव–शिला में कवि ने बुन्देलखण्ड के उदात्त वीरों के भावों को अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। जिसमे झाँसी की रानी, तात्या टोपे, मंगल पांडे जैसे वीरों के अमर बलिदान को याद किया है। बुन्देलखण्ड के महाराजा छत्रसाल की वीरता और पराक्रम ने किस प्रकार मुगलों को परास्त किया। आज भी विश्व में छतरपुर महाराजा छत्रसाल की नगरी के नाम से जाना जाता है।

"तेरे शासन का भगवाध्वज विंध्याचल पर नित लहराया,
जय कीर्ति केतु तेरा दिशि–दिशि देशों में फहराया।"[9]

नीव–शिला पृष्ठ 58

निष्कर्ष –

इस तरह हम देखते हैं कि वर्तमान में जो भी देश में संकट है उसमें शुक्लजी की रचना से नीव–शिला अपने आप में एक अमूल्य कृति है। जो राष्ट्र के निवासियों में राष्ट्रप्रेम की जागृति करती है। जो अपने देश में भ्रष्टाचार, बेईमानी, चाटुकारता के कारण जो इस देश में अभी तक राष्ट्रभाषा नहीं बन पा रही उस पर समस्त प्रान्तों को जागरुक करता है कि राष्ट्रहित में सर्वो परि राष्ट्रभाषा हिन्दी है।

कवि की हार्दिक इच्छा है कि नवयुवा में राष्ट्रीय चेतना जागृत हो और वो अपने देश का ही नही विश्व का कल्याण करें।

इस रचना के माध्यम से कवि भारतवर्ष में सबकों आगे बढ़नें का आह्वान करते हैं और स्वयं मात्र नीव–की शिला बने रहना चाहते हैं जो एक सार्थक रचना है।

तुम वैभव की कक्षाओं में चढ़ते जाओ ।
पर मुझे नीव की शिला मात्र तो रहने दो।।

कवि चाहता है कि समाज अपने प्राचीन मूल्यों का सम्मान करे। समाज में मानवतावादी दृष्टि कोण नैतिकता, ईमानदारी, भाईचारा, स्त्रियों का सम्मान व्याप्त हो।

इसी मत मे मैथिलीशरण गुपत जी भी कहते हैं।

"किस भाँति जीना चाहिए, किस भाँति मरना चाहिए,
सो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए।
पद–चिन्ह उनके यत्न–पूर्वक खोज लेना चाहिए,
निज पूर्व–गौरव –दीप का बुझने न देना चाहिए।"[10]

भारत–भारती पृष्ठ 143

शुक्लजी ने इस रचना के माध्यम से वे प्रश्न उठाए हैं जो आज भी प्रशंसनीय हैं। जो वर्तमान युग को नई राह दिखाता है और भविष्य में भी देशवासियों का मार्ग प्रशस्त करेगी।

कवि की रचना नीव–शिला की कविताएँ हीरों के समान अपनी अलग पहचान बनाए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. शुक्ल पं. श्रीनिवास, नीव–शिला, 11, सं. द्वि तीय, 2021, बुन्देलखण्ड केशरी छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट, छतरपुर (म.प्र.)
2. चतुर्वेदी माखनलाल–पुष्प की अभिलाषा
3. शुक्ल पं. श्रीनिवास, नीव–शिला, 33, सं. द्वि तीय, 2021, बुन्देलखण्ड केशरी छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट, छतरपुर (म.प्र.)
4. शुक्ल पं. श्रीनिवास, नीव–शिला, 15,3, सं. द्वि तीय, 2021, बुन्देलखण्ड केशरी छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट, छतरपुर (म.प्र.)
5. गुप्त मैथिलीशरण, भारत–भारती,114, सं. ग्यारहवां,1912, साकेत प्रकाशन राष्ट्रकवि निवास चिरगांव, झांसी
6. शुक्ल पं. श्रीनिवास, नीव–शिला, 37, सं. द्वि तीय, 2021, बुन्देलखण्ड केशरी छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट, छतरपुर (म.प्र.)
7. शुक्ल पं. श्रीनिवास, नीव–शिला, 38,39, सं. द्वि तीय, 2021, बुन्देलखण्ड केशरी छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट, छतरपुर (म.प्र.)
8. गुप्त मैथिलीशरण, भारत–भारती,160, सं. ग्यारहवां,1912, साकेत प्रकाशन राष्ट्रकवि निवास चिरगांव, झांसी
9. शुक्ल पं. श्रीनिवास, नीव–शिला, 58, सं. द्वि तीय, 2021, बुन्देलखण्ड केशरी छत्रसाल स्मारक पब्लिक ट्रस्ट, छतरपुर (म.प्र.)
10. गुप्त मैथिलीशरण, भारत–भारती,143, सं. ग्यारहवां, 1912 साकेत प्रकाशन राष्ट्रकवि निवास चिरगांव, झांसी